पर्यावरणीय स्थिरता के लिए गांधीवादी प्रासंगिकता

- डॉ. दिलीप कुमार

महात्मा गांधी के विचार वैश्विक स्तर पर तीव्र गति से प्रासंगिक हो रहे हैं। विश्वभर के लोग अपनी समस्याओं का समाधान गांधी के शिक्षा में ढूंढ रहे हैं। आजकल पर्यावरणीय स्थिरता सबसे ज्वलंत मुद्दा है, जिससे हममें से अनेक लोग बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है। पर्यावरणीय स्थिरता का मतलब क्षमता को बनाए रखना है, जैसे कि पर्यावरण को पुनर्जीवित करने की क्षमता और लोगों की अपनी रहने की स्थिति पर नियंत्रण बनाए रखने की क्षमता। 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट के संदर्भ में, स्थिरता "भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करना है।" सतत विकास को अवसरों की श्रेणी में सुधार की एक प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जा सकता है जो आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय प्रणालियों के लचीलेपन को बनाए रखते हुए व्यक्तिगत मनुष्यों और समुदायों को अपनी आकांक्षाओं और पूर्ण क्षमता को एक निरंतर अवधि में प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा। पर्यावरणीय स्थिरता की अवधारणा, तीन प्रमुख बिंदुओं को शामिल करने के लिए विकसित हुई है: आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण। प्रत्येक दृष्टिकोण एक डोमेन (एक प्रणाली) से मेल खाता है जिसकी अपनी अलग शक्ति और उद्देश्य हैं। अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से वस्तुओं और सेवाओं की खपत में वृद्धि के माध्यम से मुख्य रूप से मानव कल्याण में सुधार की ओर अग्रसर है। पर्यावरणीय डोमेन पारिस्थितिक तंत्र की अखंडता और लचीलापन की सुरक्षा पर केंद्रित है। सामाजिक डोमेन मानव संबंधों के संवर्धन और व्यक्तिगत और सामूहिक आकांक्षाओं की उपलब्धि पर जोर देता है। दूसरे शब्दों में, सतत विकास के लिए अनुकूली क्षमता और आर्थिक, सामाजिक और पारिस्थितिक तंत्र (गुंडरसन और हॉलिंग 2001) में सुधार के अवसरों में वृद्धि की आवश्यकता है। इसके साथ ही अनुकूली क्षमता में सुधार से लचीलापन और स्थिरता बढ़ेगी।

समकालीन पर्यावरण आंदोलन:1960 के दशक से पहले पर्यावरण के संरक्षण और इसे बनाए रखने की दिशा में कोई ठोस प्रयास नहीं किए गए थे। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दुनिया ने 1970 के दशक में तेल संकट और 1980 के दशक में ऋण संकट का सामना किया। हालांकि, पारिस्थितिक आंदोलन पहले कट्टरपंथी सांस्कृतिक आंदोलनों के रूप में शुरू हुए। 1970 के दशक में, पारिस्थितिक आंदोलन एक राजनीतिक आंदोलन बन गया लेकिन जागरूकता इस बात की थी कि पारिस्थितिकी की मांग न केवल क्षेत्रीय और स्थानीय आकांक्षाएं हो बल्कि राष्ट्र विभाजनों में साझा मूल्य का प्रतिनिधित्व भी करे। हम जानते हैं कि 1970 - किसी भी वास्तविक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव वाली पहली पर्यावरणीय घटना मानी जाती है, और यही कारण है कि पर्यावरण क्षरण की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए पृथ्वी दिवस मनाने का निर्णय लिया गया। पर्यावरणीय स्थिरता के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए प्रयासों को निम्नानुसार सूचीबद्ध किया जा सकता है।

1.**1972** - स्टॉकहोम सम्मेलन में, रोम के क्लब ने 'लिमिट्स टू ग्रोथ' के रूप में एक रिपोर्ट प्रकाशित की। इसने चेतावनी के साथ पर्यावरण और जनसांख्यिकीय समस्याओं को नया करने और पार करने के लिए मानव क्षमता से संबंधित आशावाद को संयोजित करने का प्रयास किया। और चेतावनी दिया कि यदि तत्कालीन प्रचलित रुझान जारी रहे, तो विकास के लिए जानबूझकर किया जाने वाले नियंत्रण के गंभीर परिणाम होंगे।

2.**1980** - ब्रांट आयोग ने अपना 'उत्तर-दक्षिण; उत्तरजीविता' के लिए एक कार्यक्रम किया, जो मानव अस्तित्व के लिए जिम्मेदारी को राजनीतिक क्षेत्र में मजबूती से रखता है। यह ऐसे समय आया जब नेता वैश्विक गरीबी, असमानता, मानवाधिकारों, न्याय और प्राकृतिक संसाधनों की कमी के मुद्दों को संबोधित कर रहा है। इसके साथ ही तुलनात्मक रूप से वर्तमान शीत युद्ध और वैचारिक आसन से अधिक चिंतित भी है। आयोग ने इस बात पर जोर दिया कि विकास का मुख्य उद्देश्य किसी राष्ट्र की उत्पादक शक्तियों और उसकी पूर्ण मानव क्षमता के उपयोग में आत्म पूर्ति और रचनात्मक साझेदारी की ओर ले जाना है।

3.**1983** - विश्व पर्यावरण और विकास आयोग द्वारा काम शुरू किया गया।

4.**1987** - ब्रंटलैंड आयोग द्वारा 'अवर कॉमन फ्यूचर' शीर्षक वाली रिपोर्ट पर चिंता व्यक्त किया गया है। इसके प्रकाशन में वर्तमान प्रौद्योगिकी और सामाजिक संगठनों द्वारा लगाई गई सीमाओं का वर्णन है। इसके साथ-साथ पर्यावरण संसाधनों पर मानव गतिविधियों के प्रभावों को अवशोषित करने के लिए जीवमंडल की क्षमता को बताया गया है। इसने पहली बार सतत विकास की परिभाषा स्पष्ट रूप से दिया है, जो कि एक उपयुक्त राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, अंतर्राष्ट्रीय और प्रशासनिक उत्पादन प्रणाली को पहचानने और आत्म-सुधार की क्षमता के लिए दी गयी है। यह एक अहसास था कि 'पर्यावरण पर विकास' के प्रभाव से 'विकास पर पर्यावरण' के प्रभाव को समझने में बदलाव आवश्यक है, अन्यथा, यह वैश्विक संकट को जन्म देगा।

5.**1992** - रियो डी जनेरियो में पृथ्वी शिखर सम्मेलन हुआ। जिसमे पर्यावरण और विकास पर 'रियो घोषणा', 'जलवायु परिवर्तन पर रूपरेखा सम्मेलन', 'जैविक विविधता पर सम्मेलन' और 'एजेंडा 21' के रूप में ज्ञात समझौते सहित कई समझौते किए गये। इस सम्मेलन ने जागरूकता पैदा की कि समकालीन खपत पैटर्न ने पर्यावरण को खराब कर दिया है।

6.**1997** - क्योटो प्रोटोकॉल को संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज द्वारा अपनाया गया, जिसने सदस्य देशों में जलवायु परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए इसे कानूनी रूप से बाध्यकारी बनाने का प्रयास किया, 1990 के सापेक्ष 2012 तक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 5.2% की कमी की उम्मीद की गई।

7.**2006** - 'द लिविंग प्लैनेट' रिपोर्ट कहती है कि पश्चिमी समाजों द्वारा अपनाई जाने वाली जीवन शैली ने पृथ्वी ग्रह के सूक्ष्म संतुलन को बिगाड़ दिया।

8.**2007-08** - द ह्यूमन डेवलपमेंट रिपोर्ट 2007-08, 'फाइटिंग क्लाइमेट चेंज: ह्यूमन सॉलिडेरिटी इन ए डिवाइडेड वर्ल्ड' में उल्लेख किया गया है, कि "जलवायु परिवर्तन प्रबुद्ध सिद्धांत पर सवाल उठाता है?

क्योंकि मानव प्रगति भविष्य को अतीत से बेहतर बनाएगी"। इसलिए पर्यावरण को डीकार्बोनाइज करने और औद्योगिक क्रांति से पहले के वातावरण को फिर से स्थापित करने के तरीके की बेताबी से तलाश की जा रही है। जोसेफ स्टिग्लिट्ज़ ने अपनी पुस्तक 'मेकिंग ग्लोबलाइज़ेशन वर्क' में लिखा है कि "वैश्वीकृत दुनिया में, पश्चिमी देशों ने पर्यावरणीय मूल्यों पर भौतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी है।" उन्होंने आगे लिखा कि "80% ग्लोबल वार्मिंग हाइड्रोकार्बन और शेष वनों की कटाई के कारण होता है। पृथ्वी रेफ्रिजरेटर और एयर कंडीशनिंग के साथ संयुक्त कारों का सामना नहीं कर सकती क्योंकि इससे ओजोन परत और पृथ्वी की वहन क्षमता को अपरिवर्तनीय क्षति होगी।"

गांधी की विकास और पर्यावरणीय स्थिरता की अवधारणा:

महात्मा गांधी की राय में, विकास की किसी भी योजना में मनुष्य को केंद्र में होना चाहिए। विकास का दीर्घकालीन दृष्टिकोण अपनाना होगा, क्योंकि समृद्धि का भी हम पर ऋण है। मनुष्य को प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा। पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ना नहीं चाहिए। उद्देश्य गरीबी के सागर में समृद्धि के टापू बनाने का नहीं होना चाहिए; बल्कि जीवन के स्तर को बढ़ाने और गरीबी का मुकाबला करने के लिए। गांधी का मानना है कि 'सतत विकास एक विचारधारा है जिसे वैश्विक स्तर पर तैयार किया गया है जो इस बात को दर्शाता है कि मनुष्य पारिस्थितिकी तंत्र से अंतर्संबंधित है। यह एक आंदोलन है क्योंकि यह जीवन के एक तरीक़े का सुझाव देता है। इसमें समाज के सभी सदस्यों की सक्रिय भागीदारी शामिल हैं। गांधी के विचार उत्पादन, उपभोग, आदतों और राजनीतिक प्रणालियों में कुल मूल्य परिवर्तन में भी परिलक्षित होते हैं। यह व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय और सार्वभौमिक स्तर पर व्यक्ति के नैतिक उत्तरदायित्व पर अधिक बल देता है। गांधी सर्वोदय में विश्वास करते थे और इसलिए सबका कल्याण उनकी सोच का आधार था; इसलिए स्थिरता के प्रति उनके समुदाय केंद्रित दृष्टिकोण ने 'मानव जीवन की बेहतरी' और 'सभी मानवीय जरूरतों की बुनियादी जरूरतों की पूर्ति सुनिश्चित करने' पर जोर दिया। सभी प्रकार के शोषण से बचकर मानव का कल्याण अंतिम लक्ष्य है। गांधी ने महसूस किया कि संपूर्ण विश्व में मानवीय गरिमा को स्थापित करने की आवश्यकता है। गांधी जनता के अर्थशास्त्री थे और बिना किसी संरचित मॉडल के पर्यावरणविद थे। यद्यपि उन्होंने पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास का संरचित मॉडल नहीं दिया, फिर भी उनके सभी विचारों को एक साथ जोड़ते हुए, हमें तार्किक रूप से पर्यावरण की दृष्टि से सतत विकास मॉडल प्राप्त होता है।

गांधी ने समाज में सत्ता के विकेंद्रीकरण की वकालत की। उन्होंने व्यक्तिगत स्तर पर 'स्वराज', स्थानीय स्तर पर 'ग्राम समाज' और वैश्विक स्तर पर 'सर्वोदय' की कल्पना की। उनका मानना था कि शक्ति लोगों में निवास करती है। विश्व स्तर पर कार्यरत एक परस्पर अन्योन्याश्रित सहकारिता नेक वातावरण बनाने में सहायक होती है। उनकी ट्रस्टीशिप अवधारणा सर्वोदय के लिए है। समाज का प्रत्येक सदस्य सभी के सामूहिक प्रयासों से उत्पन्न धन का ट्रस्टी होता है। इस प्रकार, यह व्यक्तिगत खोज और धन के संग्रह से इनकार करता है और इसे एक बेहतर समाज के लिए सभी के धन में परिवर्तित कर देता है। उन्हें उम्मीद थी कि ट्रस्टीशिप प्रकृति के संरक्षण के आसपास केंद्रित उत्पादन प्रणालियों के आधार पर अहिंसक और

गैर-शोषक सामाजिक-आर्थिक संबंधों और विकास मॉडल में परिणत होगी। उनका सतत विकास एक समग्र प्रतिमान पर आधारित है जो प्रकृति के संबंध में व्यक्ति और समाज के सर्वांगीण विकास पर जोर देता है। यह पूरी सोच उस नैतिक दृष्टि पर आधारित थी जिसमें व्यक्ति एक केंद्रीय स्थिति में होता है। यदि आन्तरिक परिवर्तन प्राप्त हो जाता है, तो बाह्य परिवर्तन स्वयं की देखभाल कर लेता है। उपभोक्ता समाज से संरक्षक समाज में एक न्यायिक बदलाव आधुनिक युग की मांग प्रतीत होता है।

हिंद स्वराज 1909 में, उन्होंने अनियोजित और लापरवाह औद्योगिकीकरण के खतरों के बारे में बात की; विकास उन्मुख सिद्धांत को सतत विकास के सिद्धांतों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए जो नुकसान नहीं पहुंचाएगा। जो मनुष्य और पारिस्थितिक तंत्र के सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व की गारंटी देगा। सतत विकास एक विचारधारा है, जो वैश्विक स्तर पर खींची गई है, जो यह दर्शाती है कि मनुष्य पारिस्थितिक तंत्र से जुड़े हुए हैं। यह एक आंदोलन है क्योंकि यह जीवन का एक तरीका सुझाता है। इसमें समाज के सभी सदस्यों की सक्रिय भागीदारी शामिल है। स्व-सहायता, आत्मनिर्भरता, उद्योगों का विकेंद्रीकरण और श्रम, गहन प्रौद्योगिकी; ये सार्थक जीवन को संतुष्ट करने के गुणात्मक लक्ष्य हैं।

गांधी ने 20वीं शताब्दी के पहले दशक में 'हिंद स्वराज' में लिखा था कि भौतिक वस्तुओं और सेवाओं के लिए एक निरंतर खोज और चाहतों के अंतहीन गुणन से प्रेरित सभ्यता 'शैतानी' है, जो कर्तव्यों की प्राथमिकताओं के संदर्भ में सभ्यता को परिभाषित करती है; 'नैतिकता का पालन और संयम का प्रयोग', इस प्रकार लालच को सीमित करती है। हिंद स्वराज पहले 'सत्याग्रह' के बाद सतत विकास का घोषणापत्र बन गया। आठ साल (1906-1914) तक यह आधुनिक पश्चिमी सभ्यता के शोषण के खिलाफ एक आंदोलन बन गया। अधिक व्यापक अर्थ में, इसमें पृथ्वी ग्रह को बचाने की चुनौतीपूर्ण और करुणामय दृष्टि थी। मानव जाति और प्रकृति का सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व एक साथ न्याय और सभी संस्कृतियों पर आधारित सभ्यता के सह-अस्तित्व पर निर्भर एक दृष्टिकोण को मानता है। 1911 में, गांधी ने 'प्रकृति की अर्थव्यवस्था' वाक्यांश का प्रयोग किया, जो पारिस्थितिकी की तुलना में मानवीय कार्यों की संवेदनशीलता और गहरी समझ को सामने लाता है। 1928 में, उन्होंने लिखा, "भगवान न करे कि भारत भी पश्चिम के तरीके के बाद औद्योगीकरण को अपना ले। यदि 300 मिलियन का पूरा देश इसी तरह का आर्थिक शोषण करता है, तो यह दुनिया को टिड्डियों की तरह नंगा कर देगा।" अभूतपूर्व ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रही दुनिया के लिए यह बयान समकालीन प्रतीत होता है।

दांडी यात्रा1930: गांधी ने प्राकृतिक संसाधनों पर आम आदमी के अधिकार का दावा करने का एक अभूतपूर्व तरीका अपनाया, जिसमें नमक सबसे बुनियादी और प्राथमिक है। दांडी यात्रा को स्वतंत्रता संग्राम की दृष्टि से देखें तो इसका व्यापक उद्देश्य दुनिया को भौतिकता के राक्षसी लोभ से मुक्त करना था। इस कार्य के साथ-साथ उनके प्रसिद्ध कथन, 'पृथ्वी के पास सभी की जरूरतों के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन किसी के लालच के लिए नहीं' का दुनिया के दिमाग पर शाश्वत प्रभाव है।

ऊर्जा संकट: कोयले, तेल और गैस के अधिक उपयोग के परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग हुई है। मकई और गन्ने से बायोडीजल और इथेनॉल के बढ़ते उपयोग के परिणामस्वरूप खाद्य उत्पादन में कमी और

पानी की अधिक खपत होने की संभावना है। यह सब अस्थिर प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध उपभोग के कारण है। भारत भी तेल बाजार की अनिश्चितताओं और मूल्य अस्थिरता के अधीन है। आवश्यकताओं को कम करना बापू का दिखाया हुआ तरीका है। दांडी मार्च के दौरान कोई मोटरसाइकिल पर बापू के लिए संतरे लेकर आया। बापू ने संतरे की पेशकश को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि जब आप चल सकते हैं तो मोटरसाइकिल से बचें।

पानी की समस्या: पानी की कमी और प्रदूषित पानी आज की दो प्रमुख समस्याएं हैं। गिरता जल स्तर और वनों की कटाई सरकार के स्तर पर नियंत्रित किए जाने वाले मुख्य मुद्दे हैं। ऐसी तमाम समस्याओं से सत्तर साल पहले गांधी अच्छी तरह वाकिफ थे। गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सूखे का अनुभव हुआ था। यह जानते हुए कि बड़े पैमाने पर वनीकरण जल संकट का सामना करने के लिए एक प्रभावी कदम हो सकता है, गांधी ने वृक्षारोपण के लिए कहा। 1947 में दिल्ली में एक प्रार्थना सभा में, उन्होंने सुझाव दिया कि अकाल और भोजन की कमी से बचने के लिए सिंचाई के उद्देश्यों के लिए जल संचयन का अभ्यास किया जाना चाहिए। आश्चर्य की बात यह है कि 2006 में एम.एस. स्वामीनाथन समिति द्वारा भी यही सुझाव दिया गया था। इसका मतलब है कि गांधी अपने समय से बहुत आगे थे। जर्मनी में ग्रीन पार्टी की स्थापना और प्रकृति संरक्षण के अनुरूप नीतियों को आगे बढ़ाने के लिए की गई पहल पर्यावरणीय स्थिरता आंदोलन के लिए गांधी की प्रासंगिकता को स्पष्ट रूप से समझाती है। पार्टी के संस्थापकों में से एक, श्रीमती पात्रा केली ने महात्मा के प्रभाव को प्रशंसनीय रूप से अभिव्यक्त किया। उन्होंने कहा कि 'हमारे काम के विशेष क्षेत्र में हम अपने महात्मा गांधी से बहुत प्रेरित हुए हैं, यानी हमारे विश्वास में कि जीवन शैली और उत्पादन की विधि, जो कच्चे माल की अंतहीन आपूर्ति पर निर्भर करती है और जो उन कच्चे माल का भरपूर उपयोग करती है, प्रेरक शक्ति भी प्रदान करती है। अन्य कच्चे माल का हिंसक विनियोग नहीं करना चहिये। इसके विपरीत, पारिस्थितिक रूप से उन्मुख जीवन शैली और अर्थव्यवस्था के हिस्से के रूप में कच्चे माल की जिम्मेदार खपत उस जोखिम को कम करती है जो हिंसा की नीतियों का पीछा करेगी। यह लगातार प्रकृति संरक्षण की नीतियों को आगे बढ़ाने का मामला बनाता है।

सतत विकास आर्थिक और पारिस्थितिक विचारों का एक संश्लेषण है- पर्यावरणीय संकटों को हल करने के लिए सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और पारिस्थितिक अवधारणाओं को एक साथ रखा गया है। पारिस्थितिक स्तर पर, इसे पौधों और जानवरों और उनके आवास और पर्यावरण के बीच व्यवस्थित संबंध से निपटने वाले विज्ञान के रूप में तैयार किया गया है। सतत विकास एक विचारधारा नहीं बल्कि एक आंदोलन और एक दृष्टि भी है। एक विचारधारा के रूप में इसने हमारा ध्यान वैश्विक उत्तरदायित्वों की ओर आकर्षित किया है और यह संकेत दिया है कि मानव पारिस्थितिकी के साथ परस्पर जुड़ा हुआ है। एक आंदोलन के रूप में, यह जीवन का एक तरीका सुझाता है, और समाज के सभी सदस्यों की सक्रिय भागीदारी का आह्वान करता है।

पर्यावरण को बचाने के लिए कार्य बिंदु: वैश्वीकरण में, हर कोई धन सृजन और संचय करने में लगा हुआ है। लेकिन हमें वेल्थ क्रिएशन के प्रति अपना नजरिया बदलने की जरूरत है। हमें अपनी जरूरतों को नियंत्रित करने की अवधारणा पर आधारित एक नई आर्थिक व्यवस्था की जरूरत है। लालच से धरती माता का विनाश ही हो सकता है। हमें अपना नजरिया बदलने की जरूरत है। इस पृथ्वी को सभी के लिए रहने का स्थान बनाने के लिए सभी को समायोजित करने के लिए हमारे दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता है। हमें न्यायोचित तरीकों से धन सृजन के तरीकों को बदलने की जरूरत है। इस तरह के साधन प्रकृति को खतरे में नहीं डालेंगे। हमें याद रखना चाहिए कि साध्य साधनों को उचित नहीं ठहराते। मानव विचार पर आधारित आर्थिक दर्शन एक बेहतर विश्व व्यवस्था सुनिश्चित कर सकता है। गांधी ने इस बात पर जोर दिया कि सतत विकास को खतरे में डाले बिना उचित तरीकों से धन का सृजन आर्थिक नीति का आधार होना चाहिए। सादा जीवन उच्च विचार हमारा जीवन दर्शन होना चाहिए। गांधीवादी विचार आध्यात्मिक रूप से उन्मुख हैं और एक समग्र दृष्टिकोण रखता हैं। यह प्रकृति में समावेशी है।

आइए इसे समझते हैं। आइए हम पृथ्वी को बचाएं और पृथ्वी हमें बचाए। मानव का लालच, अधिक शोषण करके अधिक आकर्षित करने के लिए जारी रहना, संसाधनों को समाप्त कर देगा। जिस दिन संसाधन समाप्त हो जाएंगे और पृथ्वी एक बंजर ग्रह बन जाएगी, हम समझेंगे कि हम अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ी के प्रति क्रूर रहे हैं। हमें अस्थिर प्रथाओं का विरोध करने की आवश्यकता है। केवल आवश्यक मात्रा में भोजन लिया जाना चाहिए क्योंकि भोजन की बर्बादी से अधिक मीथेन का उत्पादन होता है। आज हमारी जीवनशैली अत्यधिक अस्थिर है। हम एक वातानुकूलित कार में यात्रा करते हैं और फिर पसीना बहाते हैं! हम दूसरों को अपना बैग ले जाने के लिए कहते हैं और फिर अपनी अतिरिक्त कैलोरी बर्न करने के लिए जिम में पसीना बहाते हैं! अगर आप अपनी तकदीर नहीं बदल सकते तो आप अपना नजरिया बदलिये। हमें बुरी प्रथाओं को भूलने की जरूरत है। हमें अभ्यास करने, वस्तुओं का पुन: उपयोग करने और पुनर्चक्रण करने की आवश्यकता है। पृथ्वी की वहन क्षमता सीमित है। हम उस पर नाजायज बोझ डाल रहे हैं। एक सरल और अनुकूल वातावरण दृष्टिकोण अपनाएं। अच्छे लोगों को उन्हें बताने के लिए कानूनों की आवश्यकता नहीं होती है लेकिन वे स्वयं अनुशासित होते हैं और इसलिए बुद्धिमानी से काम लेते हैं। ऊर्जा और तेल के भंडार को बचाने के लिए कार पूलिंग को अपनाया जाना सबसे आसान तरीका हो सकता है। अत्यधिक सावधानी और सावधानी के साथ पानी के उपयोग की सरल आदतों से पानी की बचत हो सकती है। गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों का और अधिक दोहन करने की आवश्यकता है। इसलिए, हमें मनुष्य के रूप में चीजों को हल करने और सीखने की जरूरत है। काम करने की हमारी क्षमता ही हमारा धन है। मांग और आपूर्ति के आधार पर बाजार सुधारों की सार्वभौमिक स्वीकृति, जो मुख्य रूप से 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट' पर केंद्रित है। तकनीकी प्रगति से प्रेरित वाणिज्यिक विचार 'सम्पन्न और विपन्न' के बीच की खाई को ट्रिगर कर सकते हैं, जिससे उनकी आर्थिक ताकत के आधार पर दुनिया विभाजित हो सकती है। बदलाव अवश्यंभावी है लेकिन यह जानना जरूरी है कि क्या बदलना है, किस हद तक बदलना है और इस बदलाव को लाने

की कीमत क्या हो सकती है। अंधाधुंध परिवर्तन विनाशकारी परिणाम ला सकते हैं। सकल घरेलू उत्पाद और बाजार सूचकांक कभी-कभी भ्रामक और अर्थहीन भी हो सकते हैं, जब तक कि कृषि और उद्योग, गांवों और शहरों के बीच के अंतर को न्यूनतम तक सीमित करके विकास समावेशी न हो। जब तक एक समान अवसर प्रदान नहीं किया जाता है और सभी की भावनाओं और आकांक्षाओं का ध्यान नहीं रखा जाता है, तब तक स्थायी शांति और खुशी नहीं हो सकती है। प्रोफ़ेसर हर्बर्ट गिरारडेट ने अपनी पुस्तक, 'सेंचुरीविंग द सेंचुरी: फ़ेसिंग द क्लाइमेट कैओस' में 'पृथ्वी समुदाय' की अवधारणा दी है। वह महात्मा के शब्दों से बहुत कुछ लेते हैं: "पृथ्वी के पास सभी की ज़रूरतों के लिए पर्याप्त संसाधन हैं और किसी के लालच के लिए नहीं।" टाइम पत्रिका 2007 में 51 ग्लोबल वार्मिंग सर्वाइवल गाइड्स के साथ सामने आया। 51वीं गाइड यह है कि अधिक साझा करना और सरल जीवन के लिए कम उपभोग करना। हम सरलता से जीना सीख सकते हैं ताकि दूसरे आसानी से जी सकें। सवाल पूछने के बजाय, मुझे क्यों करना चाहिए हम सवाल पूछते हैं, मुझे क्यों नहीं करना चाहिए?

निष्कर्ष:

जैसा कि गांधी ने कहा था कि आइए हम अपने आप से शुरुआत करें ताकि आने वाली पीढ़ियां हमें दोष न दें। गांधी ने एक बार कहा था, "मैं तुम्हें एक ताबीज दूंगा। जब भी तुम संदेह में हो, या जब स्वयं तुम्हारे साथ बहुत अधिक भ्रम की स्थिति हो जाए तो निम्नलिखित परीक्षण लागू करो। आप सबसे गरीब और सबसे कमजोर आदमी का चेहरा याद करो, जिसे तुमने देखा है और स्वयं से पूछो कि आप जिस कदम पर विचार कर रहे हैं वह उसके लिए उपयोगी होगा। क्या वह इससे कुछ हासिल कर पाएगा? क्या यह उसके अपने जीवन और भाग्य पर नियंत्रण बहाल करेगा? दूसरे शब्दों में, क्या यह स्वराज की ओर जाएगा। भूखे और आध्यात्मिक रूप से भूखे लाखों लोगों का भुख मिटा पायेगा तब आप अपने संदेहों को पाएँगे और स्वयं पिघल जाएँगे"। हमें महात्मा के इन वचनों को हर क्षण स्मरण करने की आवश्यकता है।

संदर्भ-सूची

प्रभात एस.वी. (2009); गांधी टुडे, सीरियल प्रकाशन, नई दिल्ली।

महात्मा गांधी, (1938); हिंद स्वराज, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

महात्मा गांधी, (1927); सत्य के साथ मेरे प्रयोग, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

पर्यावरण पर विभिन्न रिपोर्ट।

डॉ. दिलीप कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर एवं पाठ्यक्रम समन्वयक, अंग्रेजी पत्रकारिता,

उत्तर क्षेत्रीय परिसर, जम्मू, भारतीय जनसंचार संस्थान, 9015466626, prof.dlpkmr05@gmail.com